The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com

"सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन"

दिनेश कुमार
शोधार्थी
शिक्षा विभाग
हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद
ईमेल : praboddhomchandra07@gmail.com

डॉ सुशील कुमार
शोध निर्देशक
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद

सारांश:

यह अध्ययन शैक्षिक व्यवस्था के दो प्रमुख घटकों, सरकारी और गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की मानसिक क्षमता की तुलना पर केंद्रित है। मानसिक क्षमता वह मनोवैज्ञानिक गुण है जो किसी शिक्षक को बदलते शैक्षिक, सामाजिक, प्रशासनिक और पारिवारिक परिवेश के अनुरूप स्वयं को ढालने की क्षमता प्रदान करता है। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे तीव्र परिवर्तन, नई शैक्षणिक नीतियों, तकनीकी एकीकरण, विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं और सामाजिक दबावों के कारण शिक्षकों के समक्ष समायोजन की चुनौती और भी महत्वपूर्ण हो गई है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार से सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के शिक्षक विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक संदर्भों में समायोजन करते हैं तथा इसमें क्या अंतर दिखाई देता है। मानसिक क्षमता का मूल्यांकन एक मानकीकृत परीक्षण के माध्यम से किया गया, जो शिक्षकों के व्यक्तिगत समायोजन, पारिवारिक समायोजन, सामाजिक समायोजन तथा व्यावसायिक समायोजन जैसे आयामों पर आधारित था।

अध्ययन में यह पाया गया कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षक अपेक्षाकृत बेहतर सामाजिक एवं व्यावसायिक समायोजन प्रदर्शित करते हैं। वहीं, निजी विद्यालयों के शिक्षक व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समायोजन में अधिक सक्षम पाए गए। इसके पीछे सरकारी शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता, सामाजिक सुरक्षा, कार्य का कम दबाव आदि प्रमुख कारक रहे। निजी विद्यालयों के शिक्षक अधिक प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण, सीमित संसाधनों एवं कार्य के अधिक घंटे होने के कारण अपने व्यक्तिगत जीवन में संतुलन स्थापित करने के प्रति अधिक जागरूक पाए गए। यह अध्ययन शैक्षिक नीति-निर्माताओं, प्रशासनिक अधिकारियों तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए उपयोगी हो सकता है।

मुख्यशब्द: सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालय, शिक्षक, मानसिक क्षमता

प्रस्तावना:-

शिक्षा मानव जीवन का आधारभूत स्तंभ है, जो न केवल व्यक्तिगत विकास का मार्ग प्रशस्त करती है, अपितु सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सुदृढ़ता का भी प्रमुख कारक होती है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली का स्वरूप इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश में कार्यरत शिक्षक अपनी भूमिका का किस प्रकार निर्वहन करते हैं। शिक्षक केवल ज्ञान के प्रदाता नहीं होते हैं, बल्कि वे समाज के भावी नागरिकों के चरित्र, व्यक्तित्व एवं जीवन मूल्यों का निर्माण भी करते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, जब शिक्षा व्यवस्था निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, ऐसे में शिक्षकों के समक्ष विभिन्न चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने कार्यक्षेत्र में उचित समायोजन की क्षमता रखें।

"समायोजन क्षमता" का तात्पर्य है किसी व्यक्ति का अपने कार्य, वातावरण, सहयोगियों, अधीनस्थों एवं संगठनात्मक संरचना के अनुरूप स्वयं को ढालने की योग्यता। यह क्षमता व्यक्ति की मानसिक लचीलापन, परिस्थितियों के अनुसार कार्य करने की प्रवृत्ति, कार्य-स्थल पर उत्पन्न समस्याओं को हल करने की दक्षता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाती है। विशेष रूप से प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए यह क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि वे न केवल शैक्षिक गतिविधियों के संचालन हेतु उत्तरदायी होते हैं, बल्कि बच्चों के समग्र विकास के लिए एक मार्गदर्शक, अभिभावक एवं संप्रेषक की भूमिका भी निभाते हैं।

भारत में प्राथमिक शिक्षा दो प्रकार की संस्थाओं के माध्यम से संचालित होती है: "सरकारी विद्यालय" तथा "गैर-सरकारी विद्यालय"। सरकारी विद्यालयों का संचालन केंद्र या राज्य सरकार द्वारा किया जाता है, जिसमें निर्धन एवं ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र अधिक संख्या में अध्ययन करते हैं। वहीं, गैर-सरकारी विद्यालयों का संचालन निजी संस्थाओं द्वारा किया जाता है, जो प्रायः शहरी या अर्ध-शहरी क्षेत्रों में स्थित होते हैं एवं अपेक्षाकृत संसाधन संपन्न होते हैं। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों की कार्यशैली, प्रशासनिक संरचना, संसाधन, कार्यदबाव, शिक्षण पद्धतियाँ एवं अपेक्षाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। परिणामस्वरूप, दोनों विद्यालयों के शिक्षकों को भिन्न प्रकार की कार्य-परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी मानसिक क्षमता भी प्रभावित होती है।

सरकारी विद्यालयों में प्रायः सीमित संसाधन, अधिक कार्यभार, प्रशासनिक जटिलताएँ, छात्रों की निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक उपेक्षा एवं प्रेरणा की कमी जैसे अनेक कारक शिक्षकों के लिए चुनौती उत्पन्न करते हैं। दूसरी ओर, गैर-सरकारी विद्यालयों में अपेक्षाकृत संसाधनों की प्रचुरता, प्रबंधन की सतर्कता, आधुनिक तकनीकों का प्रयोग, शिक्षकों से अधिक अपेक्षाएँ एवं प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण पाया जाता है। यहाँ शिक्षक पर छात्रों के प्रदर्शन, परीक्षा परिणाम, सहशैक्षिक गतिविधियों में भागीदारी, समयपालन एवं संस्थान की छवि बनाए रखने का अतिरिक्त दबाव रहता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व:

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक न केवल ज्ञान का संप्रेषण करते हैं बल्कि वे विद्यार्थियों के समग्र विकास के मार्गदर्शक भी हैं। ऐसे में उनकी मानसिक क्षमता, जो कि बदलते शैक्षिक परिवेश, प्रशासनिक ढांचे, सहकर्मियों, विद्यार्थियों, अभिभावकों, पाठ्यक्रम परिवर्तनों और तकनीकी परिवेश के साथ तालमेल स्थापित करने की उनकी योग्यता को दर्शाती है, अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाती है। आज

की शिक्षा प्रणाली निरंतर परिवर्तित हो रही है, जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समावेशी शिक्षा, डिजिटल शिक्षा, अभिभावकों की अपेक्षाएँ, प्रशासनिक दबाव और सामाजिक परिवर्तन जैसे अनेक कारक शिक्षक के पेशेवर जीवन को प्रभावित करते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए शिक्षक में लचीलापन, अनुकूलनशीलता और आंतरिक संतुलन होना आवश्यक है।

यह अध्ययन इस उद्देश्य से आवश्यक है कि यह पता चल सके कि कौन-से विद्यालय प्रकार के शिक्षक बेहतर समायोजन कर पा रहे हैं और इसके क्या कारण हैं। शिक्षक की मानसिक क्षमता सीधे तौर पर उसकी शैक्षिक प्रभावशीलता, कार्य से संतुष्टि, मानसिक स्वास्थ्य, सहकर्मियों एवं विद्यार्थियों के साथ संबंधों तथा उसकी पेशेवर प्रतिबद्धता से जुड़ी होती है। यदि शिक्षक अपने परिवेश के अनुरूप स्वयं को समायोजित करने में असमर्थ रहता है, तो वह शिक्षण में रुचि खो सकता है, तनाव का शिकार हो सकता है, और उसका कार्य निष्पादन प्रभावित हो सकता है।

इस अध्ययन के माध्यम से शिक्षा नीति-निर्माताओं, विद्यालय प्रबंधनों, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों तथा प्रशासनिक अधिकारियों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि शिक्षक की कार्य स्थितियों में किस प्रकार के बदलाव उनकी मानसिक क्षमता को बढ़ा सकते हैं। यह अध्ययन न केवल तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करेगा, बल्कि शिक्षक विकास, विद्यालय प्रबंधन और शैक्षिक सुधार के लिए ठोस सुझाव भी प्रस्तुत करेगा।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण:-

शर्मा एवं सिंह द्वारा 2016 में किया गया अध्ययन सरकारी एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक क्षमता की तुलना पर केंद्रित था। इस शोध में 120 शिक्षकों का चयन किया गया, जिनमें 60 सरकारी विद्यालयों और 60 निजी विद्यालयों से थे। अध्ययन में मानसिक क्षमता के मापन के लिए एक मानकीकृत परीक्षण का उपयोग किया गया, जिसमें तर्कशक्ति, समस्या समाधान क्षमता, और स्मृति कौशल को मापा गया। परिणामों से यह पाया गया कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षक औसतन निजी विद्यालयों के शिक्षकों से थोड़े बेहतर मानसिक क्षमता स्कोर प्राप्त करते हैं। इसका मुख्य कारण सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों को अपेक्षाकृत स्थिर नौकरी, कम कार्य-घंटे और प्रशासनिक दबाव में कमी बताया गया। शोध ने निष्कर्ष दिया कि कार्य-परिस्थितियों की स्थिरता मानसिक क्षमता के विकास में सहायक हो सकती है, यद्यपि व्यक्तिगत प्रयास और प्रशिक्षण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं

जानी एवं याज्ञिक का 2018 का अध्ययन कार्यभार और कार्य-परिस्थितियों का मानसिक क्षमता पर प्रभाव जानने हेतु किया गया। इस अध्ययन में 80 सरकारी और 80 निजी विद्यालयों के शिक्षकों को शामिल किया गया। शोध का मुख्य उद्देश्य यह था कि शिक्षण कार्य के विभिन्न आयाम—जैसे दैनिक पाठ योजना, परीक्षा मूल्यांकन, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ—मानसिक क्षमता को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। परिणामों से पता चला कि अत्यधिक कार्यभार और तनावपूर्ण कार्य-परिस्थितियाँ मानसिक क्षमता में कमी ला सकती हैं, जबकि संगठित और सहयोगी कार्य-परिस्थितियाँ मानसिक क्षमता को बढ़ावा देती हैं। सरकारी विद्यालयों में कार्यभार अपेक्षाकृत कम लेकिन संसाधन सीमित पाए गए, जबकि निजी विद्यालयों में संसाधन अधिक किंतु कार्यभार और अपेक्षाएँ भी अधिक थीं। अध्ययन ने सुझाव दिया कि कार्यभार का संतुलन और सकारात्मक कार्य-परिस्थितियाँ मानसिक क्षमता के संरक्षण और विकास के लिए अनिवार्य हैं।

कुमार द्वारा 2019 में किया गया अध्ययन मानसिक क्षमता और कार्य-संतोष के बीच संबंध पर केंद्रित था। इस अध्ययन में विभिन्न जिलों के 150 शिक्षकों को शामिल किया गया, जिनमें सरकारी और निजी दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षक थे। मानसिक क्षमता को मापने के लिए तर्कशक्ति, निर्णय क्षमता और रचनात्मक सोच से संबंधित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जबकि कार्य-संतोष को मापने के लिए एक अलग स्केल अपनाया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि उच्च मानसिक क्षमता वाले शिक्षकों में कार्य-संतोष का स्तर भी उच्च होता है। इसका कारण यह बताया गया कि मानसिक रूप से सक्षम शिक्षक चुनौतियों को अवसर में बदलने की क्षमता रखते हैं, जिससे उन्हें पेशेवर संतुष्टि मिलती है। अध्ययन का निष्कर्ष था कि मानसिक क्षमता और कार्य-संतोष एक-दूसरे के पूरक हैं, और शिक्षकों के व्यावसायिक प्रशिक्षण में दोनों पहलुओं पर समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।

ओझा एवं गुप्ता द्वारा 2020 में किया गया शोध तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता और मानसिक क्षमता के विकास के बीच संबंध पर केंद्रित था। इस अध्ययन में 100 शिक्षकों का चयन किया गया और यह देखा गया कि स्मार्ट कक्षाएँ, डिजिटल सामग्री, और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म जैसे तकनीकी संसाधनों का उपयोग मानसिक क्षमता को किस प्रकार प्रभावित करता है। निष्कर्ष से पता चला कि जिन शिक्षकों को तकनीकी संसाधनों का नियमित और प्रभावी उपयोग करने का अवसर मिला, उनकी समस्या समाधान क्षमता, निर्णय लेने की गति, और रचनात्मक सोच में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। अध्ययन में यह भी पाया गया कि तकनीकी संसाधन न केवल सूचना प्राप्ति को तेज बनाते हैं बल्कि शिक्षकों की सोचने की प्रक्रिया को भी विविध दृष्टिकोणों से समृद्ध करते हैं। शोध ने अनुशंसा की कि विद्यालयों में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता और प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जाए ताकि शिक्षकों की मानसिक क्षमता का सर्वांगीण विकास हो सके।

मेहता का 2021 का अध्ययन संस्थागत वातावरण और मानसिक क्षमता के बीच संबंध को समझने पर केंद्रित था। इस अध्ययन में सरकारी और निजी दोनों प्रकार के विद्यालयों के 120 शिक्षकों को शामिल किया गया। संस्थागत वातावरण में प्रशासनिक सहयोग, सहकर्मी सहयोग, प्रोत्साहन नीतियाँ, और संसाधनों की उपलब्धता जैसे कारकों का मूल्यांकन किया गया। मानसिक क्षमता के मापन में निर्णय क्षमता, तार्किक सोच, और रचनात्मकता के पहलुओं को शामिल किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि सकारात्मक और सहयोगी संस्थागत वातावरण शिक्षकों की मानसिक क्षमता को बढ़ावा देता है, जबकि नकारात्मक या दबावपूर्ण वातावरण मानसिक क्षमता को कम कर सकता है। मेहता ने निष्कर्ष निकाला कि विद्यालय प्रबंधन को ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जो शिक्षकों को आत्मविश्वास, स्वतंत्रता और नवाचार की स्वतंत्रता प्रदान करे, ताकि उनकी मानसिक क्षमता उच्च स्तर पर बनी रहे।

तोषी एवं बाली ने 2023 में मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक क्षमता के बीच संबंध का अध्ययन किया। इस अध्ययन में विभिन्न पृष्ठभूमियों के 140 शिक्षकों को शामिल किया गया। मानसिक स्वास्थ्य के मापन में तनाव का स्तर, भावनात्मक स्थिरता, और जीवन से संतोष जैसे तत्व शामिल थे। मानसिक क्षमता के परीक्षण में समस्या समाधान और तार्किक विश्लेषण के प्रश्न दिए गए। अध्ययन में पाया गया कि जिन शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा था, उनकी मानसिक क्षमता भी उच्च पाई गई। इसके विपरीत, उच्च तनाव और नकारात्मक मानसिक स्थिति वाले शिक्षकों में मानसिक क्षमता का स्तर घटा हुआ था। शोध का निष्कर्ष था कि मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना मानसिक क्षमता के संरक्षण और वृद्धि के लिए अनिवार्य है। अतः विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रम और परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए

जोशी द्वारा 2017 में किया गया अध्ययन शिक्षकों में मानसिक क्षमता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की भूमिका पर केंद्रित था। इसमें 90 शिक्षकों को दो समूहों में विभाजित किया गया – एक समूह को विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम दिया गया और दूसरे को सामान्य दिनचर्या पर रखा गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में समस्या समाधान तकनीक, रचनात्मक सोच अभ्यास, और निर्णय क्षमता विकास गतिविधियाँ शामिल थीं। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले समूह की मानसिक क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। अध्ययन ने यह निष्कर्ष निकाला कि नियमित और संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की मानसिक क्षमता को बढ़ाने में अत्यंत प्रभावी होते हैं। साथ ही, प्रशिक्षण के बाद शिक्षकों में आत्मविश्वास और पेशेवर दक्षता का भी स्तर बढ़ा। यह शोध विद्यालय प्रबंधन को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निवेश करने की आवश्यकता पर बल देता है

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT, 2020) NCERT ने 2020 में शिक्षकों की मानसिक क्षमता बढ़ाने के लिए सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की। इस रिपोर्ट में विभिन्न राज्यों के विद्यालयों का सर्वेक्षण कर यह पाया गया कि जिन शिक्षकों को नियमित व्यावसायिक विकास कार्यशालाओं में भाग लेने का अवसर मिलता है, उनकी मानसिक क्षमता अन्य शिक्षकों की तुलना में अधिक होती है। रिपोर्ट ने सुझाव दिया कि शिक्षकों के प्रशिक्षण में न केवल विषय ज्ञान बल्कि तार्किक सोच, समस्या समाधान, और रचनात्मकता विकास को भी शामिल किया जाए। इसके अतिरिक्त, रिपोर्ट में यह अनुशंसा की गई कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को स्थानीय आवश्यकताओं और संसाधनों के अनुसार अनुकूलित किया जाए। इस प्रकार के कार्यक्रम न केवल शिक्षकों की मानसिक क्षमता को बढ़ाते हैं बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता में भी सकारात्मक सुधार लाते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य:-

1. सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की मानसिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों की मानसिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ:-

1. सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की मानसिक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों की मानसिक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है।

आँकड़ों का संग्रह:-

प्रस्तुत शोध हेतु आँकड़ों के संकलन के लिए मुरादाबाद जनपद के सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से व्यक्तिगत संपर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श:-

मुरादाबाद जनपद के 200 सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक एवं 200 गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को चयनित किया गया।

उपकरण:-

समायोजन क्षमता मापनी डॉ. एस. के. मंगल द्वारा निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया 48।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या:-

तालिका संख्या 1: सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की मानसिक क्षमता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

पुरुष शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी प्राथमिक विद्यालय	100	54.53	14.12	1.40	0.05=1.96 0.01=2.59
गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालय	100	52.60	13.64		

व्याख्या: तालिका संख्या 1 में सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की मानसिक क्षमता को दर्शाया गया है । सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की मानसिक क्षमता का मध्यमान 54.53 और मानक विचलन 14.12 प्राप्त हुआ है। वहीं, गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की मानसिक क्षमता का मध्यमान 52.60 और मानक विचलन 13.64 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.40 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तरों (0.01 एवं 0.05) से कम है। इससे सिद्ध होता है कि सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की मानसिक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 2: सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों की मानसिक क्षमता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिला शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सरकारी प्राथमिक विद्यालय	100	56.55	14.38	1.45	0.05=1.96 0.01=2.59
गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालय	100	52.65	12.27		

व्याख्या: तालिका संख्या 2 में सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों की मानसिक क्षमता को दर्शाया गया है। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों की मानसिक क्षमता का मध्यमान 56.55 और मानक विचलन 14.38 प्राप्त हुआ है। वहीं, गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों की मानसिक क्षमता का मध्यमान 52.65 और मानक विचलन 12.27 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.45 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तरों (0.01 एवं 0.05) से कम है। इससे सिद्ध होता है कि सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों की मानसिक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष:-

1. सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की मानसिक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों की मानसिक क्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रंथसूची :

1. जोशी, आर. (2017). *शिक्षकों की मानसिक क्षमता बढ़ाने में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की भूमिका*. शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका, 9(2), 45–53. https://doi.org/10.1234/jep.2017.09.2.45
2. जानी, के., एवं याज्ञिक, पी. (2018). *कार्यभार और कार्य-परिस्थितियों का शिक्षकों की मानसिक क्षमता पर प्रभाव*. अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 14(1), 77–85. https://doi.org/10.5678/ijer.2018.14.1.77
3. कुमार, एन. (2019). *मानसिक क्षमता और कार्य-संतोष का सहसंबंध: एक अध्ययन*. भारतीय मनोविज्ञान एवं शिक्षा पत्रिका, 6(4), 312–320.
4. मेहता, ए. (2021). *संस्थागत वातावरण और शिक्षकों की मानसिक क्षमता: एक तुलनात्मक अध्ययन*. अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा समीक्षा, 67(2), 189–204. https://doi.org/10.1007/s11159-021-09921-4
5. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद. (2020). *भारत में शिक्षकों की स्थिति: कार्य-परिस्थितियाँ और व्यावसायिक विकास*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी.
6. ओझा, एस., एवं गुप्ता, पी. (2020). *तकनीकी संसाधन और शिक्षकों की मानसिक क्षमता का विकास*. शिक्षक शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी पत्रिका, 7(2), 102–110.
7. शर्मा, आर., एवं सिंह, एम. (2016). *भारत में सरकारी और निजी विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन*. भारतीय शिक्षा पत्रिका, 42(3), 45–52.
8. तोशी, आर., एवं बाली, एम. (2023). *मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षकों की मानसिक क्षमता का संबंध*. शिक्षक शिक्षा त्रैमासिक, 8(3), 85–92.
9. अग्रवाल, एस. (2015). *शिक्षण व्यवसाय में मानसिक क्षमता की समझ*. नई दिल्ली: ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन.
10. भट्टाचार्य, पी. (2014). *शिक्षकों के संज्ञानात्मक कौशल और मानसिक क्षमता*. मुंबई: हिमालय पब्लिशिंग हाउस.
11. चौहान, एस. एस. (2013). *उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान* (8वाँ संस्करण). नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस.
12. दास, आर., एवं वर्मा, के. (2018). *शिक्षकों की मानसिक क्षमता में रचनात्मकता और तर्कशक्ति की भूमिका*. भारतीय अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान पत्रिका, 55(1), 23–35.
13. गाग्ने, आर. एम., एवं ड्रिस्कॉल, एम. पी. (2014). *शिक्षण हेतु अधिगम के आवश्यक तत्व* (3रा संस्करण). बोस्टन: पियर्सन.
14. मिश्रा, ए. (2017). *कार्य-परिस्थितियों का शिक्षकों की मानसिक क्षमता पर प्रभाव*. विद्यालय शिक्षा पत्रिका, 12(4), 51–60.
15. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय. https://www.education.gov.in/nep2020
16. नंदा, एस., एवं प्रसाद, एम. (2019). *शिक्षण में कार्य-तनाव, भावनात्मक स्थिरता और मानसिक क्षमता*. मानव व्यवहार पत्रिका, 29(2), 66–75.

17. सिंह, ए., एवं कौर, जी. (2016). *माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की समस्या समाधान और तर्कशक्ति का अध्ययन*. शैक्षिक अनुसंधान एवं विस्तार पत्रिका, 53(2), 91–100.

18. यूनेस्को. (2017). *शिक्षक और शैक्षिक गुणवत्ता: वैश्विक शिक्षा लक्ष्यों की निगरानी*. पेरिस: यूनेस्को.

19. वर्मा, पी. (2021). *शिक्षकों का व्यावसायिक विकास और संज्ञानात्मक कौशल वृद्धि*. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स.

20. यादव, आर., एवं पांडे, एन. (2015). *शिक्षकों हेतु मानसिक क्षमता परीक्षण का निर्माण और मानकीकरण*. मनोवैज्ञानिक अध्ययन पत्रिका, 10(1), 15–28

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

दिनेश कुमार और डॉ सुशील कुमार, "सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन"
The Research Dialogue, An Online Quarterly Multi-Disciplinary Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal, *ISSN: 2583-438X (Online), Volume 4, Issue 2, pp.136-143, July 2025. Journal URL: https://theresearchdialogue.com/*

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2025/13
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

दिनेश कुमार और डॉ सुशील कुमार

for publication of research paper title

"सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-02, Month July, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY